राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में महात्मा गाँधी के शिक्षा दर्शन का समावेशन

अय्याज़ अहमद खान*

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने आधुनिक भारत के लिए जो शैक्षिक योजनाएँ बताई थीं, उन्हें राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का पहला ब्लूप्रिंट कहा जा सकता है, जो व्यवसाय केंद्रित, मूल्य आधारित और जनोन्मुखी था। स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय शिक्षा के विकास एवं गुणात्मक संवर्धन हेतु भारत सरकार द्वारा समय-समय पर विभिन्न योजनाएँ और नीतियाँ बनाई गईं। भारत सरकार द्वारा इक्कीसवीं शताब्दी की 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' का निर्माण किया गया, जो भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित होकर शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों, विश्वासों, आदर्शों और आवश्यकताओं को आत्मसात किए हुए आकांक्षात्मक लक्ष्यों, जिनमें सतत विकास लक्ष्य 4 शामिल हैं, के आधार पर शिक्षा के सभी पक्षों में सुधार एवं पुनर्गठन के लिए प्रतिबद्ध है। इस लेख में महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों तथा 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' की अनुशंसाओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। जिसमें महात्मा गाँधी द्वारा शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों, जैसे— शैक्षिक समानता, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा, अनिवार्य तथा निःशुल्क शिक्षा, सर्वांगीण विकास, चरित्र निर्माण, मातृभाषा, पाठ्यक्रम, हस्तशिल्प केंद्रित शिक्षा, उच्च शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, रचनात्मक तथा आलोचनात्मक सोच, भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों, अध्यापक, आत्मनिर्भरता तथा भारतीय एकता और अखंडता संबंधी व्यक्त किए गए विचारों तथा सुझावों का 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' में समावेशन प्रस्तुत किया गया है।

भारत सदियों से विभिन्न धर्म, जाति, संस्कृति, परंपरा, भाषा तथा मान्यताओं का देश रहा है। इस अद्वितीय विशेषता के लिए भारत को पूरे विश्व में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के लिए जाना जाता है। भारतवर्ष में प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक अनेक महान विभूतियों ने जन्म लिया है और इन महान विभूतियों ने अपने दार्शनिक एवं सामाजिक कृतित्व के माध्यम से समाज को नई दिशा प्रदान की तथा समाज के पुनर्निर्माण में महती भूमिका भी निभाई (चौधरी तथा गंगवार, पृष्ठ 13, 2020)। भारत में एक ऐसे ही महान दार्शनिक, चिंतक, शिक्षाविद् तथा समाज-सुधारक का जन्म 2 अक्तूबर, 1869 को हुआ था, जिसे दुनिया मोहन दास करमचंद गाँधी अथवा महात्मा गाँधी के नाम से जानती है। उनका शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान रहा है। वे शिक्षा के द्वारा एक शोषणविहीन समाज की स्थापना करना

*असिस्टेंट प्रोफेसर, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी सेंटर, मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल 742223

चाहते थे। गाँधी जी के शिक्षा दर्शन का विश्लेषण उनके शैक्षिक विचारों तथा कार्यों के आधार पर किया जा सकता है क्योंकि गाँधी जी का शिक्षा दर्शन देश के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन के व्यापक अनुभवों से विकसित हुआ था (श्वेता, पृष्ठ 14, 2017)। गाँधी जी के शिक्षा दर्शन में आदर्शवाद, प्रकृतिवाद और प्रयोजनवाद, तीनों दार्शनिक विचारों का मिश्रण पाया जाता है। आदर्शवाद उनके जीवन-दर्शन पर आधारित है, जबकि प्रकृतिवाद और प्रयोजनवाद उस दर्शन को व्यवहार में लाने में सहायक हैं। इसीलिए उन्हें एक व्यावहारिक आदर्शवादी के रूप में भी जाना जाता है। गाँधी जी शरीर को प्रकृतिवाद, मस्तिष्क को प्रयोजनवाद और आत्मा को आदर्शवाद का तत्व मानते थे। एक आदर्शवादी के रूप में गाँधी जी हमेशा बच्चों में सच्चाई और अहिंसा जैसे आदर्शों के साथ अनुशासित जीवन व्यतीत करने पर बल देते थे। एक प्रयोजनवादी के रूप में वे शिक्षा में कर्म के सिद्धांत को समाविष्ट करने की बात करते थे। उनका मानना था कि गतिविधियों या व्यावहारिक कार्यों के माध्यम से हम जो सीखते हैं, वह चिरस्थायी होता है। एक प्रकृतिवादी के रूप में गाँधी जी बालक की प्रकृति को विशेष महत्व देते थे। क्योंकि वह बालक को उसकी रुचि एवं क्षमता के अनुसार उसकी सामाजिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर क्रिया करके सीखने पर बल देते थे। उनके विचार में शिक्षा के द्वारा बच्चों का संपूर्ण विकास होना चाहिए।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने आधुनिक भारत के लिए जो शैक्षिक योजनाएँ बताई थीं, उसे राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का पहला ब्लूप्रिंट कहा जाता है, जो व्यवसाय केंद्रित, मूल्य आधारित और जनोन्मुखी है। गाँधी जी ने वर्ष 1945 में सेवाग्राम सम्मेलन में अपनी शिक्षा योजना का विस्तारपूर्वक वर्णन किया, जो मुख्य रूप से प्री-बुनियादी शिक्षा (7 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए), बुनियादी शिक्षा (7 से 14 वर्ष के आयु तक) और पोस्ट-बुनियादी (14 से 18 वर्ष के आयु तक) पर आधारित हैं। स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय शिक्षा के विकास एवं गुणात्मक संवर्धन हेतु भारत सरकार द्वारा समय-समय पर विभिन्न योजनाएँ और नीतियाँ बनाई गईं। स्वतंत्र भारत में पहली *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968* में बनाई गई थी, जिसमें 10+2+3 की संरचना, त्रिभाषा सूत्र आदि के साथ गुणवत्ता के समावेशन को बढ़ावा देने के लिए कई ठोस कदम उठाए गए। इसके बाद वर्ष 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति और 1992 में संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा का विकेंद्रीकरण, शिक्षा का एकसमान स्वरूप, मुक्त विश्वविद्यालय एवं दूरस्थ शिक्षा की योजना, शिक्षा के लिए पर्याप्त धन उपलब्ध कराना आदि अनुशंसाओं को लागू किया गया। शिक्षा के सार्वभौमिकीकरण एवं सभी बच्चों तक शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित करने को कानूनी रूप देते हुए भारत सरकार द्वारा *निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिनियम 2009* लागू किया गया, जिसे 1 अप्रैल, 2010 को पूरे देश में लागू किया गया। इक्कीसवीं शताब्दी की आवश्यकताओं एवं प्रगतिशील भारत को समृद्ध बनाने के लिए भारत सरकार द्वारा वर्ष 2020 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति का निर्माण किया गया। जो भारतीय ज्ञान परंपरा को केंद्र मानते हुए शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों, विश्वासों, आदर्शों और आवश्यकताओं को आत्मसात किए हुए आकांक्षात्मक लक्ष्यों, जिनमें सतत विकास लक्ष्य शामिल हैं, के संयोजन में शिक्षा के सभी पक्षों के सुधार एवं पुनर्गठन के लिए प्रतिबद्ध

है (परिचय, पृष्ठ 4)। यह शिक्षा नीति राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के स्वप्न को साकार करने का मार्ग भी प्रशस्त करती है, जिन्होंने एक ऐसे आत्मनिर्भर भारत का सपना देखा जो अपनी सांस्कृतिक जड़ों को संजोते हुए वैश्विक स्तर पर आधुनिक विज्ञान और तकनीकी की दृष्टि से अग्रणी हो। इस दृष्टि से गाँधी जी के शैक्षिक विचारों की चर्चा *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है। इस लेख में महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में दिए गए सुझावों के आधार पर अन्वेषित कर प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

महात्मा गाँधी के शैक्षिक समानता संबंधी विचारों का *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में समावेशन

महात्मा गाँधी को भारतीय असमानता और भेदभाव की गहरी समझ थी। इसी वजह से वह ज्ञान-लोकतंत्र का समर्थन करते थे और हमेशा हर वर्ग के लोगों तक ज्ञान प्रसारित करने की वकालत करते थे (पांडेय, पृष्ठ 1200, 2020)। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के अध्याय 'परिचय' में स्पष्ट रूप से कहा गया है, "सभी विद्यार्थियों के लिए, चाहे उनका निवास स्थान कहीं भी हो, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करानी होगी। इस कार्य में ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर रह रहे समुदायों, वंचित और अल्प-प्रतिनिधित्व वाले समूहों पर विशेष ध्यान दिए जाने की जरूरत होगी। ऐसे समूहों के सभी बच्चों के लिए, परिस्थितिजन्य बाधाओं के बावजूद, हर संभव पहल की जानी चाहिए जिससे वे शिक्षा व्यवस्था में प्रवेश भी पा सकें और उत्कृष्ट प्रदर्शन भी कर सकें" (पृष्ठ 5)। आगे ज्ञान-समानता के इस विचार को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के छठे अध्याय में भी रेखांकित किया गया है, "समतामूलक और समावेशी शिक्षा न सिर्फ़ स्वयं में एक आवश्यक लक्ष्य है, बल्कि यह समाज निर्माण के लिए भी अनिवार्य कदम है, जिसमें प्रत्येक नागरिक को सपने संजोने, विकास करने और राष्ट्र हित में योगदान करने का अवसर उपलब्ध हो" (बिंदु 6.1, पृष्ठ 38)।

महात्मा गाँधी के प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा संबंधी विचारों का *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में समावेशन

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल का आशय, बच्चों के लिए एक देखरेखपूर्ण और सुरक्षित परिवेश उपलब्ध कराते हुए उनके स्वास्थ्य, साफ-सफाई और पोषण इत्यादि पर ध्यान देना तथा प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा का आशय उस विद्यालय-पूर्व शिक्षा से है, जिसमें कथा, कहानियों, कविताओं, गीत, संगीत, नृत्य और खेल-खिलौनों आदि के माध्यम से बच्चों को शिक्षा प्रदान की जाती है (कुमार, पृष्ठ 6, 2020)। महात्मा गाँधी ने विद्यालय-पूर्व शिक्षा को प्री-बुनियादी शिक्षा से संबोधित किया है, जिसमें 7 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के समग्र विकास के लिए शिक्षा है (श्वेता, पृष्ठ 16, 2017)। प्री-बुनियादी शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत गाँधी जी ने व्यक्तिगत और सामुदायिक स्वच्छता, स्वयं-सहायता, शारीरिक-पोषण, भाषा-प्रशिक्षण, सामाजिक-प्रशिक्षण आदि कामों पर ज़ोर दिया था (दास, पृष्ठ 16, 2012)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा को बच्चों के मस्तिष्क के उचित विकास और शारीरिक वृद्धि को सुनिश्चित करने के दृष्टिकोण से आरंभिक छह वर्षों को महत्वपूर्ण माना है।

इसके साथ ही, वर्ष 2030 तक 3 से 6 वर्ष के प्रत्येक बच्चे के लिए नि:शुल्क, सुरक्षित, उच्च गुणवत्तापूर्ण एवं विकासात्मक स्तर के अनुरूप देखभाल और शिक्षा की पहुँच को सुनिश्चित करना है ताकि पहली कक्षा में प्रवेश पाने वाले सभी बच्चे स्कूल शिक्षा के लिए पूरी तरह से तैयार हो जाएँ (बिंदु 1.1, पृष्ठ 9)। इस नीति में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में मुख्य रूप से लचीली, बहुआयामी, बहु-स्तरीय, खेल आधारित, गतिविधि आधारित और खोज आधारित शिक्षा को शामिल किया गया है जिसका समग्र उद्देश्य बच्चों के शारीरिक, संज्ञानात्मक, सांस्कृतिक, संवाद के लिए प्रारंभिक भाषा, साक्षरता और संख्या ज्ञान के विकास में अधिकतम प्रतिफलों को प्राप्त करना है (बिंदु 1.2, पृष्ठ 9)।

महात्मा गाँधी के अनिवार्य तथा नि:शुल्क शिक्षा संबंधी विचार का *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में समावेशन

महात्मा गाँधी ने अपनी अध्यक्षता में 22 और 23 अक्तूबर, 1937 को वर्धा एजुकेशनल कॉन्फ्रेंस में भारतीय शिक्षा से संबंधित चार प्रस्ताव पारित किए थे। जिसमें मुख्य रूप से राष्ट्रव्यापी 7 वर्ष तक अनिवार्य तथा नि:शुल्क शिक्षा की बात कही गई थी। गाँधी जी चाहते थे कि 7 से 14 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों को नि:शुल्क, अनिवार्य तथा सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा का प्रावधान हो (जेना, पृष्ठ 58–59, 2020)। गाँधी जी की प्राथमिक शिक्षा की अवधारणा मैट्रिक तक थी। गाँधी जी ने इसी संदर्भ में कहा था, "मैं भारत के लिए स्वतंत्र और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के सिद्धांत को दृढ़तापूर्वक मानता हूँ। मैं यह भी मानता हूँ कि इस लक्ष्य को पाने का सिर्फ यही एक रास्ता है कि हम बच्चों को कोई उपयोगी उद्योग सिखाएँ और उसके द्वारा उनकी शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास करें" (गाँधी, पृष्ठ 198, 1960)। जबकि *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के दूसरे अध्याय में विद्यालयी शिक्षा को संबोधित करते हुए बुनियादी साक्षरता पर विशेष बल देते हुए कहा गया है कि प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों में सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता के लिए राज्य या केंद्रशासित प्रदेश की सरकारें 2025 तक एक क्रियान्वयन योजना तैयार करेंगी (बिंदु 2.2, पृष्ठ 11–12)। इस नीति में, स्कूली शिक्षा प्रणाली के प्राथमिक लक्ष्यों में ड्रॉपआउट बच्चों की संख्या कम करने तथा सभी स्तरों पर शिक्षा की सार्वभौमिक पहुँच को प्राथमिकता दी गई है (बिंदु 3.1, पृष्ठ 14)।

महात्मा गाँधी के सर्वांगीण विकास संबंधी विचार का *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में समावेशन

महात्मा गाँधी के अनुसार सच्ची शिक्षा वह है, जो बच्चों के आध्यात्मिक, बौद्धिक और शारीरिक पक्षों को उत्तेजित और विकसित करती है (मिश्रा, पृष्ठ 159, 2015)। गाँधी जी कहते हैं, "मनुष्य न तो केवल बुद्धि है, न ही केवल पशु तुल्य शरीर, न वह केवल दिल है और न ही केवल आत्मा। मानव की पूर्णता के लिए सभी का उचित एवं संतुलित सहयोग आवश्यक है। इसी में ही शिक्षा का अर्थ निहित है" (सिंह और खंडूड़ी, पृष्ठ 2–3, 2020)। गाँधी जी ने बच्चों को 3H (Hand, Head and Heart) की शिक्षा अर्थात हाथ-मस्तिष्क-हृदय के द्वारा स्कूल में प्रशिक्षण देने पर ज़ोर दिया था। वह हृदय की पूर्ण शुद्धता को प्राप्त करने के लिए शारीरिक व्यायाम और हस्तशिल्प को

स्कूली शिक्षा में आवश्यक मानते थे और आगे वह सुझाव भी देते हैं कि प्रत्येक विद्यार्थी को शिक्षा के दौरान ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए (सुभ्रमण्यम और राजा, पृष्ठ. 02, 2020)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के 'परिचय' में स्पष्ट रूप से लिखा है, "शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने, एक न्यायसंगत एवं न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत आवश्यकता है" (पृष्ठ 3)। इस नीति में 3 से 18 वर्ष के सभी बच्चों के लिए 5+3+3+4 पाठ्यक्रम के पुनर्गठन की बात कही गई है। जिसमें प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा को सीखने की नींव बताया गया है। वर्तमान व्यवस्था में 3 से 6 वर्ष के बच्चों को भी इस ढाँचे में शामिल किया गया है। यह प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के अंतर्गत (5 वर्ष तक) मुख्य रूप से लचीली, बहुआयामी, बहु-स्तरीय, खेल आधारित, गतिविधि आधारित और खोज-आधारित शिक्षा को शामिल किया गया है (बिंदु 1.1, पृष्ठ 9)। जिसका मुख्य उद्देश्य बच्चों के शारीरिक, संज्ञानात्मक, संवेगात्मक, नैतिक, चारित्रिक एवं सांस्कृतिक विकास के साथ-साथ संवाद हेतु प्रारंभिक भाषा तथा साक्षरता का विकास करना है। इसके अतिरिक्त *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में बच्चों के आहार, पोषण और स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है। जिसमें दोपहर के (मध्याह्न) भोजन कार्यक्रम को प्राथमिक विद्यालय के साथ-साथ तैयारी कक्षाओं तक भी विस्तारित करने की योजना है (बिंदु 1.6, पृष्ठ 10)। इस नीति में बच्चों को कुपोषण या अस्वस्थता से सुरक्षित रखने के लिए पौष्टिक भोजन के साथ-साथ नियमित स्वास्थ्य जाँच, 100 प्रतिशत टीकाकरण तथा इसकी निगरानी के लिए हेल्थ कार्ड जारी करने का महत्वपूर्ण प्रावधान है (बिंदु 2.9, पृष्ठ 13–14)।

महात्मा गाँधी के चरित्र निर्माण संबंधी विचारों का *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में समावेशन

जीवन में संघर्ष करने की शक्ति, सामूहिकता का भाव, दूसरों के प्रति संवेदनशीलता, यह सब व्यक्ति के निर्माण के लिए आवश्यक हैं (मिश्रा, पृष्ठ 131–132, 2018)। क्योंकि शिक्षा चरित्र निर्माण के लिए सबसे शक्तिशाली साधन है (बिश्वास, पृष्ठ 939, 2021)। गाँधी जी ने शिक्षा प्रणाली में चरित्र निर्माण को प्रथम स्थान दिया है (साखरे, पृष्ठ 68, 2020)। इस संदर्भ में उन्होंने कहा है, "सभी ज्ञान का अंत चरित्र निर्माण होना चाहिए। शिक्षा चरित्र के बिना और चरित्र पवित्रता के बिना व्यर्थ है" (गुप्ता, पृष्ठ 172, 2018)। अतः गाँधी जी के अनुसार समस्त ज्ञान का लक्ष्य चरित्र निर्माण है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा के द्वारा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र कल्याण की बात कही गई है और पहली बार यह रेखांकित किया गया है कि विद्यार्थियों को कम उम्र में 'सही को करने' के महत्व को सिखाया जाएगा। इस नीति में चरित्र निर्माण का महाभाव भिन्न-भिन्न रूपों में दिखाई पड़ता है, जिसके द्वारा बुनियादी, मानवीय और संवैधानिक मूल्यों को विद्यार्थियों में विकसित कराने पर विशेष बल दिया गया है (बिंदु 4.28, पृष्ठ 24)। अतः *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में भौतिकता के साथ-साथ विद्यार्थियों में जीवन मूल्य व चरित्र निर्माण के संदर्भ में विशेष महत्व दिया गया है।

महात्मा गाँधी के मातृभाषा संबंधी विचारों का *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में समावेशन

भाषा किसी भी समाज एवं उसकी संस्कृति का आईना होती है। शिक्षा मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि अपनी भाषा या मातृभाषा में संप्रेषण और संज्ञान सरल, सहज और शीघ्र होता है (कुमार, पृष्ठ 133, 2020)। गाँधी जी की शिक्षा प्रणाली में मातृभाषा का विशिष्ट स्थान था, उनका मत था कि भारतीय विद्यालयों में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए (बेहेरा, पृष्ठ 114, 2016)। आगे वे कहते हैं कि विदेशी भाषा के माध्यम से दी जाने वाले शिक्षा ने हमारे बच्चों पर अनुचित दबाव डाला है, इसने उन्हें रटने और नकल करने वाला बना दिया है (सिंह,पृष्ठ 10, 2019)। प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण के माध्यम के रूप में गाँधी जी हमेशा मातृभाषा के पक्ष में थे, क्योंकि उनका मानना था कि प्राथमिक कक्षाओं में अवधारणाओं की स्पष्टता मुख्य उद्देश्य होता है, जिसे केवल मातृभाषा से ही पूरा किया जा सकता है (शर्मा, पृष्ठ 161, 2021)। इसीलिए वे अध्ययन के विषय एवं शिक्षा के माध्यम, दोनों रूपों में मातृभाषा पर ज़ोर देते थे, ताकि आसानी से ज्ञान अर्जित किया जा सके और प्रभावी ढंग से अपने विचारों को व्यक्त किया जा सके। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* ने भी मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषा पर विशेष ज़ोर देते हुए कहा है कि स्कूल स्तर पर कम से कम पाँचवीं कक्षा तक की पढ़ाई क्षेत्रीय भाषा में होनी चाहिए। इसके अलावा भारतीय भाषाएँ जो अब तक स्कूलों में लागू हुआ करती थीं, अब उच्च शिक्षा में भी लागू होंगी। इस संदर्भ में, इस नीति में स्पष्ट रूप से कहा गया है, "उच्चतर शिक्षण संस्थानों तथा उच्चतर शिक्षा के कार्यक्रमों में मातृभाषा/स्थानीय भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में उपयोग किया जाएगा और कार्यक्रमों को द्विभाषिक रूप में चलाया जाएगा ताकि पहुँच और सकल नामांकन अनुपात दोनों में बढ़ोतरी हो सके। इसके साथ ही, सभी भारतीय भाषाओं की मज़बूती, उपयोग एवं जीवंतता को प्रोत्साहन मिल सके" (बिंदु 22.10, पृष्ठ 89)।

महात्मा गाँधी के पाठ्यक्रम संबंधी विचारों का *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में समावेशन

महात्मा गाँधी ने अपनी शिक्षा प्रणाली को तीन भागों क्रमशः प्री-बुनियादी, बुनियादी और पोस्ट-बुनियादी शिक्षा में विभाजित किया है। प्री-बुनियादी शिक्षा (7 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए) के अंतर्गत गाँधी जी ने पाठ्यक्रम में व्यक्तिगत और सामुदायिक स्वच्छता, स्वयं-सहायता, शारीरिक पोषण, भाषा प्रशिक्षण, सामाजिक प्रशिक्षण आदि शामिल किया था (दास, पृष्ठ 16, 2012)। जबकि बुनियादी शिक्षा कार्यक्रम (7 से 14 वर्ष के आयु तक के बच्चों के लिए) के अंतर्गत पाठ्यक्रम में मातृभाषा, गणित, सामाजिक अध्ययन और सामान्य-विज्ञान, कला, शारीरिक शिक्षा आदि विषयों को सम्मिलित किया था, इसके साथ-साथ प्रतिदिन 2 घण्टे और 30 मिनट आधारभूत शिल्प की शिक्षा को समर्पित किया था (गुप्ता, पृष्ठ 181, 2018) और इसके अंतर्गत तीन मुख्य कामों, जैसे— कृषि और बागवानी, कताई और बुनाई, लकड़ी और धातु के काम को स्थान दिया था (श्वेता, पृष्ठ 17, 2017)। गाँधी जी ने पाँचवीं कक्षा तक लड़के और लड़कियों के लिए शिल्प के साथ एकसमान शिक्षा और उसके बाद विविध शिक्षा के पक्ष में थे, जिसके अंतर्गत लड़कों के लिए सामान्य

विज्ञान और लड़कियों के लिए घरेलू विज्ञान की शिक्षा शामिल थी (मिश्रा, पृष्ठ 169, 2018)। गाँधी जी ने पोस्ट-बुनियादी शिक्षा कार्यक्रम (14 से 18 वर्ष के आयु तक) में सामान्य उत्पादक व्यवसाय में प्रशिक्षण या किसी विश्वविद्यालय में पेशेवर प्रशिक्षण की शिक्षा पर बल दिया है (श्वेता, पृष्ठ 16, 2017)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्यार्थियों के विकास की अलग-अलग अवस्थाओं के अनुसार 5+3+3+4 पाठ्यचर्या की संरचना सुझाई गई है, जो क्रमशः फाउंडेशन, प्रिपरेटरी, मिडिल स्कूल और सेकंडरी स्टेज है (बिंदु 4.1, पृ. 16)। फाउंडेशनल स्टेज के अंतर्गत 3 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए लचीले, बहुस्तरीय, खेल एवं गतिविधियों के आधार पर पाठ्यक्रम में अक्षर, भाषा, संख्या, गिनती, रंग, आकार, इंडोर एवं आउटडोर खेल, पहेलियाँ और तार्किक सोच, चित्रकला, पेंटिंग, शिल्प, नाटक, कठपुतली, संगीत आदि को शामिल किया गया है (बिंदु 1.2, पृष्ठ 9)। प्रीप्रेटरी स्टेज (3 वर्ष) में पढ़ने, लिखने, बोलने, शारीरिक शिक्षा, कला, भाषा, विज्ञान और गणित को शामिल किया गया है। जबकि मिडिल स्तर पर विज्ञान, गणित, कला, खेल, सामाजिक विज्ञान, मानविकी और व्यावसायिक विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है (बिंदु 4.2, पृष्ठ 17)। साथ ही व्यावसायिक शिल्प, जैसे— बढ़ईगीरी, बिजली का काम, धातु का काम, बागवानी, मिट्टी के बर्तनों का निर्माण आदि काम अपने हाथों से करने का अनुभव प्रदान किया जाएगा। इसके अतिरिक्त कक्षा 6 से 8 में पढ़ने के दौरान सभी विद्यार्थियों को 10 दिन के बस्ता रहित पीरियड में स्थानीय व्यावसायिक पेशेवरों, जैसे— बढ़ई, माली, कुम्हार, कलाकार आदि के साथ प्रशिक्षु के रूप में काम करेंगे। सेकंडरी स्तर पर (4 वर्ष) में बहुविषयक अध्ययन के साथ शिक्षा का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक समझ न होकर चरित्र निर्माण और कौशल से सुसज्जित करना सुनिश्चित होगा। अतः महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सुझाई गई पाठ्यचर्या लचीली तथा गतिविधि आधारित होने के साथ-साथ विद्यार्थियों के समग्र विकास को समावेशित किए हुए है।

महात्मा गाँधी के हस्तशिल्प केंद्रित शिक्षा संबंधी विचारों का *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में समावेशन

महात्मा गाँधी शिक्षा के द्वारा बच्चों में व्यावसायिक कौशल का विकास करना चाहते थे ताकि वे शिक्षा ग्रहण करके अपने पैरों पर खड़े हो सकें (सिंह और खंडूड़ी, पृष्ठ 2, 2020)। उन्होंने कहा, "शिक्षा बच्चों के लिए बेरोज़गारी के विरुद्ध बीमा होनी चाहिए" (मिश्रा, पृष्ठ 159, 2015)। गाँधी जी ने अपनी शिक्षा पद्धति नयी तालीम में 'मस्तिष्क को हाथ के काम द्वारा शिक्षा मिलनी चाहिए' की मान्यता के साथ हाथ-मस्तिष्क-हृदय के तालमेल को मजबूत करने के लिए हस्तशिल्प को केंद्र में रखा था (मिश्रा, पृष्ठ 68, 2018)। गाँधी जी की इच्छा थी कि आजीविका के लिए शिल्प या व्यावसायिक कौशल सीखकर प्रत्येक बच्चा स्वावलंबी हो तथा साथ ही, शिक्षा रोज़गार सुनिश्चित करे (जेना, पृष्ठ 62, 2020)। दुर्भाग्य से, स्वतंत्रता के पश्चात हमारी शिक्षा नीतियों में कौशल विकास पर ज्यादा ज़ोर नहीं दिया गया। थोड़ी बहुत वोकेशनल ट्रेनिंग की बात बीच-बीच में

होती रही, लेकिन वह भी खानापूर्ति होकर रह गई। इस अभाव को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में दूर करने की कोशिश की गई है।

महात्मा गाँधी ने अपनी बुनियादी शिक्षा प्रणाली में शिल्प के माध्यम से ज्ञान प्रदान करने और उत्पादक दक्षता एवं व्यावहारिक कौशल सीखने पर ज़ोर दिया (सुब्रमनियम और राजा, पृष्ठ 5, 2020)। इसके अंतर्गत गाँधी जी ने शिल्प, जैसे— कृषि, सूत कातना और बुनना, लकड़ी का काम, गत्ते का काम, धातु का काम, बागबानी, चमड़े का काम आदि का प्रशिक्षण देने पर बल दिया (सिंह और खंडूड़ी, पृष्ठ 4, 2020)। इसी आधार पर *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में कक्षा 6 से 8 के दौरान विद्यार्थियों को राज्यों और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार महत्वपूर्ण व्यावसायिक शिल्प, जैसे— बढ़ईगीरी, बिजली का काम, धातु का काम, बागवानी, मिट्टी के बर्तनों का निर्माण आदि का अनुभव प्रदान करने की बात कही गई है (बिंदु 4.6, पृष्ठ 23)। इसी पर कक्षा 6 से 12 तक, छुट्टियों के दौरान भी विभिन्न व्यावसायिक कोर्स या ऑनलाइन माध्यम में भी व्यावसायिक कोर्स उपलब्ध कराए जाने की बात कही गई है (बिंदु 4.26, पृष्ठ 23–24)। जिससे वर्ष भर ऐसे बस्ता-रहित दिनों में विभिन्न प्रकार की समृद्ध करने वाली कला, क्विज, खेल और व्यावसायिक हस्तकलाओं को प्रोत्साहन दिया जा सके।

महात्मा गाँधी के उच्च शिक्षा संबंधी विचारों का *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में समावेशन

महात्मा गाँधी के अनुसार मौजूदा विश्वविद्यालयी शिक्षा में विद्यार्थियों की कोई भागीदारी या गतिविधियाँ नहीं हैं (पांडेय और अन्य, पृष्ठ 5, 2020)। गाँधी जी ने कॉलेज शिक्षा में केवल उन डिग्रियों की पेशकश की, जो समाज की बेहतरी के लिए ज्ञान का अवलोकन करने वाली हो। आगे वे इस संदर्भ में कहते हैं, "मैं कॉलेज शिक्षा को राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुकूल बनाऊँगा। साथ ही, उन्होंने शिक्षा को भिन्न-भिन्न उद्योगों के साथ जोड़ने पर भी बल दिया था (गाँधी, पृष्ठ 201, 1960)। इसी प्रकार *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के अंतर्गत एक ऐसे राष्ट्र की परिकल्पना की गई है, जिसमें राष्ट्र के आर्थिक विकास और आजीविकाओं को स्थायित्व देने में उच्चतर शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होगा। आगे इस नीति में विभिन्न तकनीकी और व्यावसायिक विषयों को सम्मिलित करने पर भी बल दिया गया है। साथ ही, चरित्र, नैतिक और संवैधानिक मूल्यों, रचनात्मकता, सेवा-भावना जैसे गुणों के विकास को भी बल दिया गया है। (बिंदु 9.1, पृष्ठ 52)। अतः उच्च शिक्षा के संदर्भ में गाँधी जी के विचार समाज की आवश्यकता पर आधारित थे, जिसे *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में भी रेखांकित किया गया है।

महात्मा गाँधी के प्रौढ़ शिक्षा संबंधी विचारों का *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में समावेशन

महात्मा गाँधी को भारत की निरक्षरता पर गहरा दु:ख था और वह निरक्षरता को देश के लिए लज्जा समझते थे। गाँधी जी की सर्वोच्च इच्छा थी कि भारत का प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित हो और वे साक्षरता को शिक्षा प्राप्त करने का साधन मानते थे। गाँधी जी ने यह महसूस कर लिया था कि जन-साक्षरता के द्वारा ही समाज को नए और स्वस्थ आधार पर संगठित

किया जा सकता है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में इसकी महत्ता को समझते हुए स्पष्ट रूप से कहा गया है कि साक्षरता और बुनियादी शिक्षा किसी व्यक्ति के वैयक्तिक, नागरिक, आर्थिक और जीवनपर्यंत शिक्षा के अवसरों की एक नवीन दुनिया को खोल देती है जो व्यक्ति को निजी और पेशेवर, दोनों ही स्तरों पर आगे बढ़ने में मदद करती है (बिंदु 21.1, पृष्ठ 83)।

महात्मा गाँधी के रचनात्मक तथा आलोचनात्मक सोच संबंधी विचारों का *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में समावेशन

महात्मा गाँधी व्यक्ति को 'कार्य के माध्यम से सीखने' या 'करके सीखने' के सिद्धांत पर ज़ोर देते थे, जो उन्हें रचनात्मक एवं आलोचनात्मक रूप से सोचने के लिए प्रेरित करता है (बिश्वास, पृष्ठ 938, 2021)। गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य भी यही था कि बच्चों को हाथ-मस्तिष्क-हृदय के द्वारा स्कूल में शिक्षा दी जाए। इसीलिए इनका प्रारंभिक चरण से ही विद्यार्थियों के लिए कार्य-संस्कृति पर बहुत ज़ोर था। ताकि विद्यार्थियों को सीखने के दौरान उत्पादन शुरू करने में सक्षम बनाया जा सके (बिश्वास, पृष्ठ 938, 2021)। गाँधी जी ने कभी काम और शिक्षा को अलग नहीं किया और वे मानते थे कि गतिविधियों के द्वारा सीखने या करके सीखने से निश्चित रूप से बच्चों में रचनात्मकता एवं आलोचनात्मक सोच विकसित होती है। गाँधी जी के इन्हीं विचारों को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में स्थान देते हुए 'परिचय' अध्याय में लिखा है, "बच्चे तार्किक एवं रचनात्मक रूप से सोचना सीखें" (पृष्ठ 3)। इस नीति के अंतर्गत बच्चों में रचनात्मक तथा आलोचनात्मक चिंतन को बढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को मुख्य अवधारणाओं, विचारों, अनुप्रयोगों और समस्या-समाधान पर केंद्रित किया गया है ताकि शिक्षण और सीखना अधिक संवादात्मक तरीके से संचालित किया जाए (बिंदु 4.5, पृष्ठ 18)।

महात्मा गाँधी के भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों संबंधी विचारों का *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में समावेशन

भारतीय संस्कृति की एक अनोखी विशेषता है कि यह विभिन्न धर्म, जाति, परंपरा, भाषा तथा मान्यताओं आदि को अपने में समेटे हुए है। महात्मा गाँधी ने भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के आवश्यक मूल्यों पर आधारित शिक्षा का समर्थन किया था। गाँधी जी अपनी संस्कृति की विशेषता में कहते हैं, "मेरी दृढ़ मान्यता है कि हमारी संस्कृति में जैसी मूल्यवान निधियाँ हैं, वैसी किसी दूसरी संस्कृति में नहीं हैं" (गाँधी, पृष्ठ 190, 1960)। इसी प्रकार, *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में पारंपरिक भारतीय मूल्यों और संवैधानिक मूल्यों (जैसे सेवा, अहिंसा, स्वच्छता, सत्य, निष्काम-कर्म, शांति, त्याग, सहिष्णुता, विविधता, बहुलवाद, नैतिक-आचरण, जेंडर संवेदनशीलता, शिष्टाचार, सहानुभूति, करुणा, देशभक्ति, लोकतांत्रिक दृष्टिकोण और बंधुत्व) को विद्यार्थियों में विकसित करने पर ज़ोर दिया गया है (बिंदु 4.28, पृष्ठ 24)। इसके अतिरिक्त इस नीति में बुनियादी स्तर से ही पाठ्यचर्या में भारतीय संस्कृति, परंपराएँ, विरासत, रीति-रिवाज, भाषा, दर्शन, भूगोल, प्राचीन और समकालीन ज्ञान, सामाजिक और वैज्ञानिक आवश्यकताएँ, सीखने के स्वदेशी

और पारंपरिक तरीके आदि सभी पक्षों को शामिल करने की बात कही गई है (बिंदु 4.29, पृष्ठ 25)। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि यह नीति गाँधी जी के भारतीय परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों संबंधी विचारों को समावेश किए हुए है।

महात्मा गाँधी के अध्यापक संबंधी विचारों का *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में समावेशन

शिक्षा को सार्थक बनाने में अध्यापक की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। महात्मा गाँधी की दृष्टि में अध्यापक को समाज का आदर्श व्यक्ति होना चाहिए (बिश्वास, पृष्ठ 939, 2021)। आगे गाँधी जी कहते हैं, "मैं पुराने विचार को मानने वाला हूँ, अध्यापक को अध्यापन-कार्य अपने अनिवार्य प्रेम के कारण ही करना चाहिए और इस कार्य के लिए उतना ही पैसा लेकर संतुष्ट रहना चाहिए जितना जीवन-निर्वाह के लिए आवश्यक हो" (गाँधी, पृष्ठ 207, 1960)। प्रत्येक अध्यापक को अपनी भूमिकाओं के निर्वहन हेतु चरित्र एवं व्यावहारिक गुणों के साथ-साथ विषय की महारत और शिक्षण-कौशलों में भी सक्षम होना अति आवश्यक है। इसके अलावा गाँधी जी हमेशा अध्यापक के मानसिक स्वास्थ्य को भी महत्व देते थे। इस संदर्भ में वे कहते हैं, "नैतिक मूल्य और सच्चाई व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य और विशेष रूप से अध्यापकों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। एक अध्यापक के लिए मानसिक स्वास्थ्य बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य अध्यापक के प्रदर्शन स्तर को बढ़ाता है तथा उसके पेशेवर विकास में मदद करता है" (मैहर और महाकुर, पृष्ठ 19, 2020)। इसी प्रकार *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* भी अध्यापकों के लिए उच्च दर्जे और उनके प्रति आदर तथा सम्मान के भाव को पुनर्जीवित करने की अनुशंसा करती है ताकि शिक्षण पेशे में बेहतर लोगों को शामिल किया जा सके। (बिंदु 5.1, पृष्ठ 30)। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के परिचय अध्याय में कहा गया है, "अध्यापकों को समाज के सर्वाधिक सम्माननीय और अनिवार्य सदस्य के रूप में पुनः स्थान देने में सहायता करनी होगी, क्योंकि अध्यापक ही नागरिकों की हमारी अगली पीढ़ी को सही मायने में आकार देते हैं। इस नीति के द्वारा अध्यापकों को सक्षम बनाने के लिए हर संभव कदम उठाए जाने की आवश्यकता है जिससे वे अपने कार्य को प्रभावी रूप से कर सकें" (पृष्ठ 5)।

महात्मा गाँधी के आत्मनिर्भरता संबंधी विचारों का *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में समावेशन

महात्मा गाँधी ने महसूस किया कि शिक्षा भारत जैसे गरीब देशों के लिए एक बड़ा बोझ है। अत: गाँधी जी का विचार था कि शिक्षा को उत्पादक कार्यों के माध्यम से स्वावलंबी बनाया जाए ताकि शिक्षा को हम आर्थिक रूप से स्वतंत्र एवं आत्मनिर्भर बना सकें (पांडेय और अन्य, पृष्ठ 4, 2020)। इसीलिए गाँधी जी का बुनियादी शिक्षा कार्यक्रम आत्मनिर्भरता पर आधारित था। इस संदर्भ में वे कहते हैं, "आत्मनिर्भरता कोई पूर्व शर्त नहीं है, लेकिन मेरे लिए यह एसिड-टेस्ट है। गाँधी जी कहते हैं कि विद्यार्थियों को खुद कुछ ऐसा काम करते रहना चाहिए, जिससे धन की प्राप्ति हो तथा स्कूल और कॉलेज स्वावलंबी बने"

(गाँधी, पृष्ठ 209, 1960)। वे सैद्धांतिक शिक्षा के विरोधी थे तथा वे गतिविधि आधारित व्यावहारिक शिक्षा पर बल देते थे, जो जीवन के सभी क्षेत्रों में काम करने के लिए कौशल और क्षमता प्रदान करती है। अतः गाँधी जी शिक्षा के द्वारा बेरोज़गारी को खत्म करके व्यक्ति तथा समाज दोनों को ही आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में शुरुआत से ही पाठ्यक्रम में व्यावसायिक प्रशिक्षण का प्रावधान रखा गया है, जिसके अंतर्गत बच्चे छठी कक्षा से ही महत्वपूर्ण व्यावसायिक शिल्प, जैसे— बढ़ईगीरी, बिजली का काम, धातु का काम, बागवानी, मिट्टी के बर्तनों का निर्माण आदि काम अपने हाथों से करने का प्रशिक्षण लेना शुरू कर देंगे। इसी तर्ज़ पर कक्षा 12 तक के सभी बच्चों के लिए छुट्टियों के दौरान विभिन्न व्यावसायिक कोर्स (ऑनलाइन मोड में) उपलब्ध कराए जाने की बात कही गई है (बिंदु 4.26, पृष्ठ 23–24)। इसमें नवीन सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी और कोडिंग जैसे कौशल को सिखाने पर भी बल दिया गया है, जो टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में आने वाले समय का भविष्य हैं। इसी नीति में वर्ष 2025 तक, स्कूल और उच्चतर शिक्षा प्रणाली के माध्यम से कम से कम 50 प्रतिशत विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा का अनुभव प्रदान करने की योजना तैयार करने की अनुशंसा की गई है। इसके लिए उच्चतर शिक्षा संस्थान स्वयं ही या फिर उद्योगों और गैर-सरकारी संगठनों के साथ साझेदारी कर व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करेंगे। अतः *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में बच्चों की व्यावसायिक दक्षता विकसित करने पर विशेष महत्व दिया गया है, जो आत्मनिर्भर भारत की कल्पना को सार्थक बनाने में योगदान देगा।

महात्मा गाँधी के भारतीय एकता और अखंडता संबंधी विचारों का *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में समावेशन

महात्मा गाँधी आपसी भाईचारे और एकता में दृढ़ विश्वास रखते थे। वे इस संदर्भ में कहते हैं, "हमारा देश भारत बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक और बहुजातीय देश है। यह विविधता ही भारत की विशेषता और पहचान है" (तिवारी, पृष्ठ 70, 2020)। गाँधी जी का सपना था— धर्म, जाति, रंग, पंथ, धन और शक्ति से मुक्त एक सार्वभौमिक समाज की स्थापना करना, जो मानवीय भाईचारे की ओर बढ़ेगा। यह समाज प्रेम और अहिंसा, सत्य और न्याय के सिद्धांतों पर आधारित एक आध्यात्मिक समाज होगा (बिस्वाल, पृष्ठ 281, 2010)। गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा का उद्देश्य बच्चों का समग्र विकास करना तथा हस्तशिल्प-अभ्यास के माध्यम से देशभक्ति की भावना पैदा करना था (जेना, पृष्ठ 62, 2020)। उनके अनुसार बुनियादी शिक्षा प्रणाली वर्ग और जाति भेद को दूर करने में सक्षम है, साथ-साथ सामाजिक एकजुटता और राष्ट्रीय एकता के लिए भी मददगार है (बेहेरा, पृष्ठ 114, 2016)। इस संदर्भ में *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के 'परिचय' अध्याय में दर्शाया गया है, "भारत के युवाओं को भारत देश के बारे में और इसकी विविध सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी आवश्यकताओं सहित यहाँ की अद्वितीय कला, भाषा और ज्ञान परंपराओं के बारे में ज्ञानवान बनाना क्योंकि यह राष्ट्रीय गौरव, आत्मविश्वास,

आत्मज्ञान, परस्पर सहयोग और एकता की दृष्टि से अति आवश्यक है" (पृष्ठ 5)। अतः *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* पूर्ण रूप से महात्मा गाँधी के भारतीय एकता और अखंडता संबंधी विचारों से ओत-प्रोत है।

निष्कर्ष

महात्मा गाँधी के संपूर्ण शैक्षिक दर्शन के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि उनका मुख्य उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करने के साथ-साथ उन्हें आत्मनिर्भर बनाना था। इसी प्रकार, *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* का मुख्य उद्देश्य भी व्यक्ति कल्याण, समाज कल्याण और राष्ट्र कल्याण है। महात्मा गाँधी के अनुसार शिक्षा सभी वर्गों के लोगों के लिए एकसामान होनी चाहिए और उन्होंने सात वर्ष तक राष्ट्रव्यापी अनिवार्य तथा निःशुल्क शिक्षा का समर्थन किया, जिसका प्रावधान राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी रखा गया है। गाँधी जी ने सात वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए प्री-बुनियादी शिक्षा के अंतर्गत स्कूल शिक्षा के लिए तैयार करने पर ध्यान केंद्रित किया, वहीं राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी तीन से छह वर्ष के बच्चों के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का वर्णन किया गया है। आध्यात्मिकता गाँधी जी के जीवन का अहम पहलू था। इसीलिए वे भौतिकता के साथ जीवन मूल्य व चरित्र निर्माण को विशेष महत्व देते थे, जिसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भली-भाँति रेखांकित किया गया है। गाँधी जी ने अपनी बुनियादी शिक्षा में हस्तशिल्प केंद्रित शिक्षा को विशेष महत्व दिया है ताकि शिक्षा के द्वारा रोज़गार सुनिश्चित किया जा सके, उसी दिशा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी कौशल विकास और उसके व्यावसायिक उपयोग पर ज़ोर दिया गया है। गाँधी जी सदैव भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के आवश्यक मूल्यों पर आधारित शिक्षा के पक्षधर थे, जिसे अपनाते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी विद्यार्थियों में पारंपरिक भारतीय मूल्यों और सभी बुनियादी मानवीय और संवैधानिक मूल्यों को विकसित करने पर ज़ोर दिया गया है। गाँधी जी प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण के माध्यम के रूप में मातृभाषा के पक्ष में थे, जिसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी प्राथमिकता दी गई है। इसके अतिरिक्त गाँधी जी क्षेत्रीय भाषाओं को भी वरीयता देते थे, जिसका प्रतिबिंब राष्ट्रीय शिक्षा नीति में दिखाई देता है, जिसमें उच्चतर शिक्षण संस्थानों तथा उच्चतर शिक्षा के कार्यक्रमों में भी मातृभाषा या स्थानीय भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाने पर बल दिया गया है। एक अच्छे अध्यापक में आदर्श गुणों को गाँधी जी द्वारा तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्वीकारा गया है, अध्यापक के सम्मान तथा उन्हें सक्षम बनाने के लिए हर संभव प्रयासों पर दोनों ही जगह प्रकाश डाला गया है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि इक्कीसवीं शताब्दी की पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति, गाँधी जी के संपूर्ण शैक्षिक दर्शन का यथार्थ रूप में साक्षात्कार कराती है, जो निश्चित रूप से भारत की सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित करते हुए वैश्विक पटल पर उच्च शैक्षिक प्रतिमान स्थापित करने में योगदान देगी।

संदर्भ

कुमार, नरेश. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के परिप्रेक्ष्य में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. अक्तूबर, 41(02), पृष्ठ संख्या 5–12.

कुमार, निरंजन. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में भारतीयता. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. अक्तूबर, 41(02), पृष्ठ संख्या 131–136.

गाँधी, महात्मा. 1960. *मेरे सपनों का भारत*. नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद.

गुप्ता, एस. 2018. महात्मा गाँधी (1869–1948) – बुनियादी टिनेंट्स ऑफ बुनियादी एजुकेशन. *एजुकेशन इन इमर्जिंग इंडिया*. पृष्ठ संख्या 169–185. शिप्रा पब्लिकेशंस, दिल्ली.

गुप्ता, पायल. 2020. इम्पैक्ट ऑफ महात्मा गाँधी नई तालीम ऑन द *न्यू एजुकेशन पालिसी 2020* – एन एनालिसिस. *जे.ई.टी.आई.आर. अक्तूबर 2020.* 07(10), पृष्ठ संख्या 1198–1201. 20 दिसंबर, 2021 को https://www.jetir.org/papers/JETIR2010150.pdf से लिया गया है.

चौधरी, सरिता और सुमित गंगवार. 2020. पंडित मदनमोहन मालवीय का शिक्षा दर्शन और *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारतीय आधुनिक शिक्षा*. अक्तूबर, 41(02), पृष्ठ संख्या 13–19.

जेना, पर्वत के. 2020. महात्मा गाँधी और बुनियादी एजुकेशन. सम्पादित पुस्तक. *"महात्मा गाँधी फ्रॉम हौली डीड्स टु अनहोली डेथ (भाग-1)"* में प्रकाशित. अध्याय 9, पृष्ठ संख्या 57–63. 15 दिसंबर, 2021 को https://osf.io/8hvm6/download से लिया गया है.

तिवारी, रमेश. 2020. गाँधी जी और हिंदी भाषा. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. जनवरी, 40(03), पृष्ठ संख्या 70–75.

दाश, बी. एन. 2012. *थियोरिस ऑफ़ एजुकेशन एंड एजुकेशन इन इमर्जिंग इंडियन सोसाइटी*. मोहनदास के. गाँधी (1869–1948) अध्याय में, पृष्ठ संख्या 281–312. डोमिनेंट पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली.

पांडेय, पी. के., ए. घोष और बी. लाहिरी. 2020. एजुकेशनल थॉट्स ऑफ महात्मा गाँधी. *यूनिवर्सिटी न्यूज*. 58(39), पृष्ठ संख्या 3–5. 21 दिसंबर, 2021 को https://www.researchgate.net/publication/344458477_Educational_Thoughts_of_Mahatma_Gandhi से लिया गया है.

पांडेय, पूजा. 2020. *फाइंडिंग गाँधी इन द नेशनल एजुकेशन पालिसी 2020*. 20 दिसंबर, 2021 को https://www.outlookindia.com/website/story/opinion-finding-gandhi-in-the-national-education-policy-2020/361300 से लिया गया है.

बिश्वास, एच.के. 2021. ए स्टडी ऑन गाँधी जी'स बुनियादी एजुकेशन एंड इट्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ट्रेंड इन साइंटिफिक रिसर्च एंड डेवलपमेंट*. जनवरी-फरवरी, 05(02), पृष्ठ संख्या 937–940. 29 दिसंबर, 2021 को https://www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd38587.pdf से लिया गया है.

बिस्वाल, यू.एन. 2010. गाँधी फिलोसोफी. *फिलोसोफी ऑफ एजुकेशन*. पृष्ठ संख्या 279–298. डोमिनेंट पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली.

बेहेरा, हदीबन्धु. 2016. एजुकेशनल फलसफा ऑफ महात्मा गाँधी विद स्पेशल रिफरेन्स टू करिकुलम ऑफ बुनियादी एजुकेशन. *इंटरनेशनल एजुकेशन एंड रिसर्च जर्नल*. जनवरी, 02(01), पृष्ठ संख्या 112–115. 30 दिसंबर, 2021 को https://www.academia.edu/21096788/EDUCATIONAL_PHILOSOPHY_OF_MAHATMA_GANDHI_WITH_SPECIAL_REFERENCE_TO_CURRICULUM_OF_BASIC_EDUCATION?email_work_card=reading-history से लिया गया है.

मिश्रा, आर.के. 2018. नयी तालीम के केंद्र– आनंद निकेतन एक विहंगावलोकन. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. जनवरी, 38(03), पृष्ठ संख्या 68–77.

मिश्रा, युधिष्ठिर. 2015. एम.के. गाँधी. *ग्रेट थिंकर्स ऑन एजुकेशन*. पृष्ठ संख्या 159–178. ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, दिल्ली.

मैहर, बी. और महाकुर, बी.के. 2020. रेलेवंस ऑफ गांधियन थॉट्स इन द ट्वेंटी फर्स्ट सेंचुरी – एन एवलुएटिव फ्रेमवर्क. *पेडागोगी ऑफ लर्निंग*. अप्रैल 06(02), पृष्ठ संख्या 14–21. 30 दिसंबर, 2021 को https://www.researchgate.net/publication/342997073_Relevance_of_Gandhian_Thoughts_in_the_21st_Century_An_Evaluative_Framework से लिया गया है.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार.

शर्मा, सारिका. 2021. ए स्टडी ऑन सिमिलरटीज बिटवीन गाँधीजी'स बुनियादी एजुकेशन एंड न्यू एजुकेशन पॉलिसी 2020. *जे.इ.टी.आई.आर*. मई, 08(05), पृष्ठ संख्या 158–163. 31 दिसंबर, 2021 को https://www.jetir.org/papers/JETIR2105274.pdf से लिया गया है.

साखरे, डी.टी. 2020. महात्मा गाँधी'स एजुकेशनल फलसफा एंड इम्पोर्टेंस ऑफ हिज एजुकेशनल थॉट्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च इन साइंस, कम्युनिकेशन एंड टेक्नोलॉजी*. अक्तूबर, 10(02), पृष्ठ संख्या 67–73. 29 दिसंबर, 2021 को https://ijarsct.co.in/Paper522.pdf से लिया गया है.

सिंह, ए.के. और खंडूड़ी, जी. 2020. राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी की नयी तालीम शिक्षा पद्धति का स्वरूप एवं शिक्षा दर्शन. *मुक्त शब्द जर्नल*. 09(05), पृष्ठ संख्या 1–7. 30 दिसंबर, 2021 को http://shabdbooks.com/gallery/400-may2020.pdff से लिया गया है.

सिंह, निरंकार. 2019. सोशल एंड एजुकेशनल व्यू ऑफ महात्मा गाँधी. *एन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कंटेम्परारी स्टडीज*. 04(02), पृष्ठ संख्या 1–10. 21 दिसंबर, 2021 को http://puneresearch.com/media/data/issues/5ca64ac9d60cb.pdff से लिया गया है.

सुभ्रमण्यम, आर. और वी. राजा. 2020. महात्मा गाँधी व्यूज ऑन एजुकेशन. पृष्ठ संख्या 1–6. 15 दिसंबर, 2021 को https://www.researchgate.net/publication/339947624_MAHATMA_GANDHI_VIEWS_ON_EDUCATION?enrichId=rgreq-83475a5c5782fd25b4c9b2e008ed2727-XXX&enrichSource=Y292ZXJQYWdlOzMzOTk0NzYyNDtBUzo4Njk2MjYwOTk1MzE3ODFAMTU4NDM0NjQyNzcxOQ%3D%3D&el=1_x_2&_esc=publicationCoverPdf से लिया गया है.

श्वेता, डे. 2017. महात्मा गाँधी एंड हिज आईडिया ऑफ बुनियादी एजुकेशन – एन हिस्टोरिकल अप्रैसल. *इंटरनेशनल जर्नल एडवांसेज इन सोशल साइंस एंड ह्यूमैनिटीज*. 05(01), पृष्ठ संख्या 14–22. 21 दिसंबर, 2021 को https://www.researchgate.net/publication/340136979_Mahatma_Gandhi_and_His_Idea_of_Basic_Education_An_Historical_Appraisal से लिया गया है.